भूमण्डलीकरण के दौर में ग्रामीण सामाजिक संरचना का परिवर्तित होता स्वरूप : उत्तर प्रदेश के दो गाँवों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण

पूजा श्रीवास्तव
प्रवक्ता समाजशास्त्र विभाग
जे0पी0बी0डी0 साहू कन्या महाविद्यालय,
मेहन्दीगंज, लखनऊ
Email: srivastava.puja19@gmail.com

हरिनन्दन कुशवाहा
वरिष्ठ शोध अध्येता, समाजशास्त्र विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय,
लखनऊ

सारांश

प्रस्तुत प्रपत्र में भूमण्डलीकरण के परिप्रेक्ष्य में ग्रामीण सामाजिक संरचना के परिवर्तित होते स्वरूप और शिक्षा के प्रति ग्रामीणों के रूझान एंव उनके जीवन मे शिक्षा से आने वाले गुणात्मक परिर्वतन का एक समाजशास्त्रीय विवरण प्रस्तुत किया गया है। भारतीय ग्रामीण समाज प्रारम्भ से विभिन्न समाजशास्त्रियों के अध्ययन का केन्द्र बिन्दु रहा है दिपांकर गुप्ता जैस सुप्रसिद्ध समाजशास्त्री का यह मानना है कि भारतीय ग्राम समाप्ति की और है यह समाजशास्त्री चिन्तन के नवीन आयाम को और समाजशास्त्रीय अनुसंधान की कोतुहूलता को बढ़ाता है। भारत में समाजशास्त्रीय इतिहास को देखें तो राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया, बदलते सामाजिक प्रतिमान की प्रक्रिया और परिर्वतनकारी शक्तियों ने ग्रामीण समाज के स्वरूप को परिवर्तित किया है यह परिर्वतनकारी शक्तियाँ भारतीय ग्रामीण समाज के बाह्य और अन्तरिक स्वरूप में सदैव विद्यमान रही हैं। मकियम मरियट का मानना है कि भारतीय गाँव मे परिर्वतन 1950 के बाद प्रारम्भ हुए हैं।

मुख्य शब्दः *भूमण्डलीकरण, सामाजिक संरचना, ग्राम, परिवर्तन।*

प्रस्तावना

परिवर्तन प्रत्येक समाज के प्रत्येक काल में कम या अधिक रूप में विद्यमान रहता है यह एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है, परिवर्तन के आभाव में मानव समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। परिवर्तन और विकास के मध्य सम्बन्ध लम्बे समय से मानवशास्त्रीयों, समाजशास्त्रीयों और अन्य समाज वैज्ञानिकों के अध्ययन का केन्द्र बिन्दु रहा है। समय समय पर विद्वानों ने परिवर्तन और विकास के सहसम्बन्ध का उल्लेख अपने अध्ययन में प्रस्तुत किया है (आनन्द मिश्रा,1998)।

विभिन्न समाजशास्त्री समाज में परिवर्तन और निरन्तरता को एक प्रक्रिया मानते हैं जो प्रत्येक समाज में निरन्तर चलती रहती है और यही प्रक्रिया समाज में होने वाले विकास का पर्याय

है। भारत में सुनियोजित सामाजिक परिर्वतन की प्रक्रिया को प्रजातांत्रिक राष्ट्र निर्माण के रूप में समाज के क्रमबद्ध विकास के संदर्भ में समझा जा सकता है। भारत में परिवर्तन के समाजशास्त्री आयामों को समझने के लिये सामाजिक ढांचे के पुनःनिर्माण की मूल प्रक्रियाओं को जानना आवश्यक है। यह प्रक्रियायें सार्वजनिक नीति तथा राष्ट्रीय विचारधारा के विशिष्ट ऐतिहासिक संदर्भों के अन्तर्गत उद्भूत होती हैं। परम्परागत भारतीय समाज में सामाजिक घटकों की अर्न्तसंरचनात्मक स्वयतता ने सामाजिक परिवर्तन की प्रकृति तथा दिशा को प्रभावित किया है। परिवर्तन की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण योगदान पाश्चात्य संस्कृति के सम्पर्क से उत्पन्न सांस्कृति पुर्नः जागरण और प्रारिम्भक औद्योगिकरण ने विकास की एक पृष्ठ भूमि तैयार की। स्वतंत्रता के पश्चात परिवर्तन की आधुनिक प्रक्रिया ने विकास के नवीन आयामों को जन्म दिया जिनमें औद्योगिकरण नगरीकरण आधुनिक शिक्षा तकनीकी शिक्षा आधुनिकीकरण और भूमण्डलीकरण का विशेष महत्व रहा है। परम्परागत मूल्यों एवं मानकों ने संस्थाओं के स्वरूपों में परिवर्तन किया है स्वतंत्रता के पश्चात एक ऐसे भारतीय समाज का पुर्नगठन किया गया। जिसमें आधुनिक मूल्यों मानकों के आधार पर भारतीय सामाजिक ढांचे के पुर्ननिर्माण को आवश्यक माना जाने लगा। योगेन्द्र सिंह स्वयं सामाजिक संरचना के आर्थिक विकास में निरन्तरता (परम्परा) को बाधा के रूप में देखते हैं। (योगेन्द्र सिंह 1973)

भारतीय समाज में परिवर्तन की एक प्रभावशाली शक्ति पाश्चात्य सभ्यता व संस्कृति है। आधुनिक भारत में रहन–सहन, वस्त्र, खान–पान, गीत, नृत्य, अभिवादन के ढंग, मकानों के डिजाइन, आदि असंख्य विषयों में जो परिवर्तन हो गये हैं या हो रहे हैं, वे सभी पाश्चात्य सभ्यता व संस्कृति के कारण ही काफी सीमा तक प्रभावित हुए हैं। कि ''भारत में अंग्रेजी शासन की स्थापना से लेकर अब तक इस समाज में पश्चिमीकरण की जो प्रक्रिया चल पड़ी है उसके फलस्वरूप भारतीय समाज में अनेक परिवर्तन हुए हैं और आज भी हो रहे हैं।'' अंग्रेजी शासन की स्थापना के बाद से भारत में औद्योगिकरण व नगरीकरण की जो लहर आई है उससे भारतीय समाज में अनेक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हो रहे हैं। एम0एन0 श्रीनिवास (1966)।

1970 के बाद सामाजिक संरचना में होने वाले परिवर्तनों ने जाति और कौटम्बिक बन्धनों को शिथिल किया। ग्रामीण सामाजिक संरचना में परिवर्तन के बाह्य कारकों ने ग्रामीण विकास की नवीन आयामों को प्रोत्साहित किया। 1990 के आर्थिक सुधारों ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को प्रभावित किया। अब ग्रामीणों के आय के स्रोत के रूप में कृषि प्रमुख स्रोत नहीं रह गया। नवीन रोजगार नगरीकरण, औद्योगिकरण ने नये विकल्प उपस्थित किये जिससे ग्रामीण समाज भी प्रभावित हुआ। आर्थिक समाज में होने वाले परिवर्तन ने अन्य संरचना के स्वरूपों को परिवर्तित किया। जिसका विस्तृत समाजशास्त्रीय अध्ययन समय समय पर विभिन्न समाजशास्त्रियों द्वारा अपने अध्ययन में वर्णित किया गया है। जिनमें देसाई, दुबे, चौहौन, योगेन्द्र सिंह और दीपांकर गुप्ता प्रमुख हैं। कुछ विद्वानों का यह मानना है कि ग्रामीण समाज अब ग्रामीण नहीं रह गये हैं। उनके बाह्य और आन्तरिक स्वरूप तेजी से परिवर्तित हुए हैं। कुछ अन्य विद्धान यह मानते है कि ग्रामीण सरंचना का स्वरूप परिवर्तित हुआ है किन्तु उनकी आत्मा अभी भी जीवित है। विभिन्न

समाजशास्त्री, सामाजिक मानवशास्त्री, और समाज वैज्ञानिकों ने अपने ग्रामीण समाज के अध्ययनो में परिवर्तन के विविध आयामो का विस्तारपूर्वक वर्णन किया है। (मरियट,1955 सिंह 1999)

आधुनिकीकरण और विकास को लेकर विभिन्न सामाजिक वैज्ञानिकों में, और समाजशास्त्रीयों में असमंजस्य रहा है। कुछ विद्वान आधुनिकीकरण को ही विकास का पर्याय मानते हैं, किन्तु आधुनिकीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जो किसी समाज में तार्किक वैज्ञानिक विश्लेषण के आधार पर सामाजिक संरचना में परिवर्तन को प्रमुखता प्रदान करती हैं विकास से तात्पर्य आर्थिक संस्थाओं में होने वाले परिवर्तन से है जिसके द्वारा समाज की अन्य संस्थाओं में स्वतः ही सार्थक परिवर्तन हो जाता है। भारत में सामाजिक परिवर्तन आधुनिकता के साथ निरन्तरता को भी दर्शाता है। (दुबे 2000)

एशियाई समाजों में बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया आधुनिक व्यवसाय, संचार एवं परिवहन के साधनों के माध्यम से प्रारम्भ हुई आधुनिकीकृत समाज में परम्परागत मूल्यों और आरोपित पदों और उन पदों से सम्बन्धित भूमिकाओं के स्थान पर नये पद और नयी भूमिका को अपनाने पर बल दिया जाता है। परम्परागत ढांचे में सामाजिक लक्ष्य को पाने के लिये पूर्व निश्चित भूमिका जुड़ी होती है जिसे स्वीकार करने के लिये व्यक्ति को बाध्य होना पड़ता है किन्तु आधुनिक समाज में व्यक्ति परानुभूति, गतिशीलता और उच्च सहभागिता द्वारा अपना मत निर्णय की प्रक्रिया में स्वतंत्र भागीदारी करता है व्यक्ति के व्यक्तित्व और विचार प्रक्रिया में परिवर्तन सामाजिक व्यवस्था की दिशा और विभिन्न पहलुओं में परिवर्तन लाते हैं। पारसन्स के सुप्रसिद्ध प्रतिमान चर में आधुनिकीकरण उनमें तीन प्रमुख परिवर्तन लाता है। प्रथम आरोपित मानदण्ड के स्थान पर उपलब्धि के आधार पर प्रस्थिति का निर्धारण इसमें एक व्यक्ति अपनी प्रदत्त प्रस्थिति में प्राप्त पदों की अपेक्षा अर्जित प्रस्थिति से प्राप्त पद के द्वारा समाज में विशिष्टता का स्थान प्राप्त करता है। द्वितीय अन्तः क्रिया का संरूप विशिष्ट मानकों के स्थान पर सार्वभौमिक मानकों द्वारा नियमित होता है। सार्वभौमिक मानक वह मानक हैं जिसमें समाज में निवास करने वाले प्रत्येक वर्ग के व्यक्ति को समान रूप से संसाधनों पर अधिकार योग्यता के आधार पर होता है। तृतीय भूमिका सम्बन्धों की व्यवस्था में प्रत्याशा तथा कर्तव्य अधिक विशिष्ट हो जाते हैं जिसमें समाज में अर्जित प्रस्थिति के द्वारा प्राप्त पदों की भूमिका के निर्वाह को प्रदत्त प्रस्थिति की तुलना में विशिष्ट माना जाता है। आधुनिकीकृत समाज ऐसी संस्थागत संरचनाओं के द्वारा संचालित होते हैं जो प्रक्रिया में निहित परिवर्तन को आत्मसात करने की क्षमता रखता है। किन्तु परम्परागत विशेषता वाले समाजों में आधुनिकीकरण चुनौतीपूर्ण रहा है। परम्परा की शक्तियाँ संघर्ष के आगे नहीं झुकती। प्राचीन लगाव समय समय पर प्रभावी हो जाते हैं। भारत में परम्परा और आधुनिकता सदैव साथ साथ विद्यमान है। वैचारिक संस्थागत संगठनात्मक बाधाये समाज व्यवस्था में व्याप्त हैं जो आधुनिकीकरण को अपनाने में अवरोध उत्पन्न करती हैं। (दुबे 2000)

आधुनिकीकरण और विकास के मध्य अन्तर सूक्ष्म ही रह जाता है। विद्वानों द्वारा आधुनिकीकरण के पर्यायवाची के रूप में विकास शब्द को प्रयोग में लाया जाता है। आधुनिकीकरण की बौद्धिक इतिहास की जड़ें विद्यमान हैं जबकि विकास ने अर्थशास्त्र से जीवन पाया है। विकास के प्रारम्भिक सिद्धान्त अर्थशास्त्र द्वारा प्रस्तुत हुए हैं। मार्क्स ने स्वयं सामाजिक संरचना में परिवर्तन के आर्थिक कारकों को प्रभावी माना है। मार्क्स वादी अपवाद को छोड़ कर सन् 1950 के बाद आर्थिक, विकासवादी चिन्तकों में डब्ल्यू आर्थर लेविस, कीन्स, होडर डोमर, रोजन स्टीड रोडन, वाल्ट डब्ल्यू0 रोस्टोव, एडम स्मिथ, कुजनेटस आदि प्रमुख थे। भारत में आर्थिक विकास के समाजशास्त्रीय आयाम को ए0आर0 देसाई, योगेन्द्र सिंह, एस0सी0 दुबे आदि समाजशास्त्री द्वारा गहनता से समझने का प्रयास किया गया है ए0आर0 देसाई ने भारत में आर्थिक विकास की चार प्रमुख चुनौतियों का उल्लेख किया है। प्रथम पुरानी संस्थाओं में परिवर्तन लाकर या उन्हें त्यागकर नयी सामाजिक संस्थाओं का विकास करना होगा। द्वितीय पुराने सामाजिक संगठन को परिवर्तित करके सम्बन्धों के जाल को विकसित करना होगा। तृतीय पुराने प्रकार के सामाजिक नियन्त्रण के तरीकों को समाप्त करके या उनमें बदलाव करके सामाजिक अधिकार की नयी विधियों का विकास करना होगा। चतुर्थ सामाजिक परिवर्तन की पुरानी एजेन्सियों पर र्पुनः विचार करके नवीन कारकों को विकसित करना होगा। देसाई मानते हैं कि सामाजिक संगठनों संस्थाओं एजेन्सियों में परिवर्तन धीरे–धीरे होता है। नवीन संस्थाओं संगठनों एजेन्सियों का निर्माण परम्परागत मूल्य मानक युक्त समाज में चुनौतीपूर्ण विशय है। (देसाई 2009)

अध्ययन क्षेत्र

उत्तर प्रदेश के लखनऊ जिले में स्थित सरोजनीनगर विकासखण्ड के गाँव औरावाँ और अन्द्यपुर देव गाँवों का चयन किया गया है। यह गाँव शहर से 24 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। गाँव के चयन में इस बात का विषेश ध्यान दिया गया हैं कि ग्रामीण समाज पर नगरीय संस्कृति का प्रभाव हो।

समग्र निदर्शन चयन–

प्रस्तुत अध्ययन में औरावाँ और अन्द्यपुर देव गाँवों का चयन क्रमशः दैव निर्दशन की लाटरी विधि एवं व्यवस्थित विधि से चयन कर वहाँ निवास करने वाले परिवारों को लिया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन मे औरावाँ और अन्द्यपुर देव की चयनित गॉवों की सामाजिक संरचना के परिवर्तित होते स्वरूप और शिक्षा के प्रति ग्रामीणों के रूझान एंव उनके जीवन मे शिक्षा से आने वाले गुणात्मक परिर्वतन का अध्ययन करना हैं

गाँवों की सामाजिक संरचना

चयनित गाँवों में ठाकुर जाति आर्थिक आधार पर सबल जाति है। औरावाँ में कुल 125 परिवार हैं। जिनमें 26.4 प्रतिशत ठाकुर, 13.6 है, ब्राह्मण, 12.8 प्रतिशत कन्नौजिया 8 प्रतिशत

कोरी, पाल 5.6 प्रतिशत कहार 4 प्रतिशत नाई, 4 प्रतिशत चौरसिया 3.2 प्रतिशत रावत और 1.6 प्रतिशत डोंग हैं। गाँव की कुल जनसंख्या 1245 है, जिसमें 668 पुरुष और 605 महिलाएँ हैं। लिंगानुपात 905 है। गाँव में कुल साक्षर पुरुष 524 कुल साक्षर महिलाएँ 437 कुल निरक्षर 202 और 82 शिशु सात वर्ष से कम उम्र के हैं। जो विद्यालय में निवेशित नहीं है। उल्लेखनीय है कि अन्द्यपुर देव मे कुल 92 परिवार हैं जिनमें जनसंख्या के अधार पर सर्वाधिक परिवार 61. 9 प्रतिशत लोध, 13 प्रतिशत रावत, 7.6 प्रतिशत नाई 5.4 प्रतिशत ठाकुर, 5.4 प्रतिशत पाल, 4.3 प्रतिशत साहू, 1.2 प्रतिशत डोंग, 1.2 शर्मा है। गाँव की कुल जनसंख्या 754 जिनमें 413 पुरुष 341 महिलाएँ हैं। अन्द्यपुर देव में लिंग अनुपात 825 हैं प्रति हजार हैं जो औरावाँ की अपेक्षा कम है जिसमें कुल साक्षर पुरुष 348, 272 साक्षर महिलाएँ 70 लोग निरक्षर एवं 64 बच्चे सात वर्ष से कम उम्र के हैं अतः जिनका विद्यालय में निवेश नहीं हुआ हैं।

ग्रामीण परिवारों के भूस्वामित्व का जाति आधारित विवरण

तालिका संख्या–1

क्र.स.	प्रमुख जातियाँ	औरावाँ	
		भूमि एकड़ में	प्रतिशत
1.	ठाकुर	171.5	45.98
2.	ब्राह्मण	116	31.34
3.	कनौजिया	19.5	5.20
4.	कोरी	60	4.29
5.	पाल	15.5	4.12
6.	लोध	10.5	2.68
7.	पासी	9.5	2.51
8.	नाई	5.5	1.44
9.	धानुक	4	1.07
10.	कहार	4.5	1.07
11.	चौरसिया	1	0.30
	कुल योग	372.4	100
अन्धपुर देव गाँव			
1.	लोध	104	50
2.	ठाकुर	32.66	15.71
3.	रावत	31	14.9
4.	पाल	14.66	7.05
5.	साहू	9.16	4.47
6.	नाई	7.66	3.66
7.	शर्मा	6	2.88
8.	डोंग	2.66	1.28
	योग	207.8	100

उत्तरदाताओं से प्राप्त तथ्यों के आधार पर यह ज्ञात होता है कि दोनों ही गाँव में भूस्वामित्व सम्बन्ध विभिन्न जातियों के मध्य भिन्न–भिन्न हैं औरावाँ गाँव में जातिय आधार पर ठाकुर परिवारों के पास 45.98 प्रतिशत भाग है। ब्राह्ममण 31.34 प्रतिशत कनौजिया 5.20

प्रतिशत, कोरी 4.29 प्रतिशत, पाल 4.12 प्रतिशत लोध 2.68 प्रतिशत पासी, 2.57 प्रतिशत, नाई 1.44 प्रतिशत, धानुक 1.07 प्रतिशत, कहार 1.07 प्रतिशत, चौरसिया के पास 0.30 प्रतिशत भूमि हैं। जबकि अन्दपुर देव में 50.04 प्रतिशत भूमि लोध परिवारों के पास 15.71 प्रतिशत ठाकुर, 14.9 प्रतिशत रावत, 7.05 प्रतिशत पाल, 4.47 प्रतिशत साहू, 3.68 प्रतिशत नाई, 2.88 प्रतिशत शर्मा और 1.28 प्रतिशत डोंग जाति के पास खेती करने योग्य भूमि है। भूमि स्वामित्व के आधार पर औरावाँ में सामान्य जातियों के पास भूमि का बड़ा भाग है। अन्य पिछड़ा वर्ग और अनुसूचित जातियों के पास भूमि का अत्यन्त छोटा भाग है जिससे वे उपभोग हेतु उत्पादन ही कर पाते हैं। औरावाँ में चौरसिया, कनौजिया, नाई परिवारों के सदस्यों ने अपनी भूमि बेच दी है। वे अपने परम्परागत व्यवसायों के साथ नगरों और महानगरों की ओर बढ़ रहे हैं। परिवार के पुरुष सदस्य रोजगार की तलाश में बाहर चले जाते हैं। उनकी अनुपस्थिति में भूमि का रख रखाव हो पाना संभव नहीं होता। उल्लेखनीय है कि अन्दपुर देव लोध परिवारों के पास कुल कृषि योग्य भूमि का आधा भाग है। ज्ञात हो कि गाँव में इस जाति के सदस्यों की संख्या भी आधी से अधिक है, इनके पास भूमि का अत्यत्य छोटा हिस्सा ही है। संख्या के आधार पर सामान्य जाति सबसे कम है किन्तु इनके पास भूमि का बड़ा भाग है। यह अपनी भूमि पर अक्सर छोटे कृषकों से खेती करवाते हैं। अन्य जातियों के पास भूमि का आकार अत्यन्त सीमित है। भूमि पर उत्पन्न फसल से परिवारों का जीवन निर्वाह नहीं हो पाता। अतः उन्हें रोजगार की तलाश में नगरों की ओर बढ़ना पड़ रहा है।

गाँवों की जातीय संरचना का विवरण

तालिका सं0–2

क्र.स.	जातियाँ	औरावाँ				अन्द्यपुर			
		सं0	प्रति	जनसंख्या	प्रति	सं0	प्रति	जनसंख्या	प्रति
1.	सामान्य	50	40	534	42.9	05	5.4	84	11.1
2.	अन्य पि0 वर्ग	53	42.4	477	38.3	74	80.4	579	76.8
3.	अनुसूचित जाति	22	17.6	234	18.8	13	14.2	91	12.1
	योग	125	100	1245	100	92	100	754	100

प्रस्तुत सारिणी से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर यह प्राप्त होता है औरावाँ गाँव में 40 प्रतिशत परिवार सामान्य जाति कुल जनसंख्या का 42.9 प्रतिशत है, 42.4 प्रतिशत परिवार अन्य पिछड़ा वर्ग जोकि कुल जनसंख्या का 38.3 प्रतिशत है और 17.6 प्रतिशत परिवार अनुसूचित जाति जोकि कुल जनसंख्या का 18.8 प्रतिशत है। जबकि अन्द्यपुर देव में सामान्य जाति के 5.4 परिवार है जोकि कुल जनसंख्या का 11.1 प्रतिशत है, 80.4 प्रतिशत परिवार अन्य पिछड़े वर्ग के है जोकि कुल जनसंख्या के 76.8 प्रतिशत हैं, वही 14.2 प्रतिशत परिवार अनुसूचित जाति के है जोकि कुल जनसंख्या का 12.1 प्रतिशत है प्राप्त आंकड़ों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि दोनों ही गाँव में जनसंख्या के आधार पर अन्य पिछड़ा वर्ग का प्रभुत्व है। किन्तु औरावाँ में सामाजिक, आर्थिक राजनीतिक रूप से उच्च जाति का प्रमुख है अन्द्यपुर देव में सामाजिक, आर्थिक आधार पर सामान्य जाति अधिक सबल है। अन्द्यपुर देव में जनसंख्या की दृष्टि से अन्य

पिछड़ा वर्ग प्रबल है किन्तु सामाजिक, आर्थिक एवं भूमि स्वामित्व के आधार पर यह अत्यन्त पिछड़े हुए हैं।

जातीय आधारित भूस्वामित्व

तालिका संख्या–3

क्र.सं.		औरावाँ		अन्द्यपुर देव	
	प्रमुख जातियाँ का भूस्वामित्व	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	सामान्य	95.2	73	13.2	14.8
2.	अन्य पिछड़ा वर्ग	21.5	16.5	67	70.5
3.	अनुसूचित जाति	13.3	10.2	13.1	14.7
	योग	130	100	89	100

प्रस्तुत सारणी से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि औरावाँ गाँव में कुल 130 हेक्टेयर भूमि पर विभिन्न जातियों का स्वामित्व जिनमें सामान्य जाति के पास कुल भूमि का 73 प्रतिशत भाग है, अन्य पिछड़ा वर्ग के पास 16.5 हेक्टेयर भूमि और अनुसूचित जाति के पास 13.3 प्रतिशत भूमि है। प्राप्त आंकड़ों के आधार पर यह ज्ञात होता है कि भूस्वामित्व सम्बन्ध ग्रामीण सामाजिक आर्थिक प्रस्थिति के निर्धारण का प्रमुख आधार हैं। जबकि अन्द्यपुर देव में सामान्य जाति के पास कुल भूमि का 14.8 प्रतिशत है, अन्य पिछड़ा वर्ग का कुल भूमि के 70.5 प्रतिशत है। वही 14.7 प्रतिशत भूमि पर स्वामित्व है। प्राप्त आंकड़ों से ज्ञात होता है कि अन्द्यपुर देव में अन्य पिछड़ा वर्ग जनसंख्यात्मक आधार पर भी यह प्रभुत्वशाली है किन्तु परिवारों की संख्या के आधार पर इनके पास भूमि का अत्यन्त छोटा भाग है इनमें से अधिकांश सीमान्त कृषक हैं जनसंख्या की दृष्टि से अनुसूचित जाति दूसरे स्थान पर है इनके पास की भूमि का छोटा हिस्सा ही है जबकि सामान्य जाति जनसंख्या की दृष्टि से सबसे कम है किन्तु इनके पास भूमि का स्वामित्व अन्य जातियों की अपेक्षा अधिक है प्राप्त आंकड़ों से ज्ञात होता है कि वर्तमान भूमण्डलिक दौर में कृषकों का भूमि से जुड़ाव कम हुआ है। वे अपने जीवन निर्वाह के लिए नवीन आधुनिक रोजगार विधियों को अपना रहे हैं। महँगे कृषि संसाधनों तक सीमान्त एवं छोटे कृषकों की पहुँच न हो पाने से उनमें कृषि के प्रति रूझान कम हुआ है। दोनों ही गाँव में सीमान्त और छोटे कृषक कृषि व्यवसाय को छोड़ कर रोजगार के नवीन व्यवसाय से जुड़ रहे हैं।

संचार एवं सम्प्रेषण के साधनों का विवरण

तालिका संख्या–4

क्र.सं.	संचार एवं सम्प्रेषण के संसाधनों का विवरण	औरावाँ				आन्दपुर देव			
		संख्या				संख्या			
		सं0	प्रति	सं0	प्रति	सं0	प्रति	सं0	प्रति
1.	रेडियो	96	76.8	125	100	59	64.1	92	100
2.	टेलीविजन	63	50.4	125	100	39	42.4	92	100
3.	टेलीफोन	19	15.2	125	100	6	6.5	92	100
	मोबाइल	57	45.6	125	100	43	46.7	92	100
4.	पंखा	71	56.8	125	100	49	53.2	92	100
5.	एयर कंडीशनर	06	4.8	125	100	02	2.1	92	100
6.	सी0डी0 प्लेयर	39	31.2	125	100	18	19.5	92	100
7.	डिस्क टी0वी0	17	13.6	125	100	08	8.6	92	100
8.	कम्प्यूटर	5	4	125	100	3	3.2	92	100

प्रस्तुत सारणी में उत्तरदाताओं से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है औरावाँ गाँव में 76.8 प्रतिशत परिवार में रेडियो, 50.4 प्रतिशत के पास टेलीविजन, 19 परिवार में टेलीफोन, 45.6 लोगों के पास मोबाइल, 56.8 प्रतिशत के पास पंखा, 4.6 प्रतिशत के पास एयर कंडीशनर, 31.2 प्रतिशत के पास सी0डी0 प्लेयर डी0वीडी0, 13.6 प्रतिशत के पास डिस्क टी0वी0 केबल की सुविधा है। 04 प्रतिशत के पास कम्प्यूटर की सुविधा उपलब्ध हैं जबकि अन्द्यपुर देव में 64.1 प्रतिशत के पास रेडियो, 42.4 प्रतिशत के पास टेलीविजन, 6.5 प्रतिशत के पास टेलीफोन, 46.7 के पास मोबाइल, 53.2 प्रतिशत के पास पंखा, 2.1 प्रतिशत के पास एयर कंडीशनर, 19. 5 प्रतिशत के पास सी0डी0 प्लेयर, 8.6 प्रतिशत के पास डिस्क टी0वी0 एवं केबल वही 3.2 प्रतिशत के पास कम्प्यूटर सुविधा है। प्राप्त आंकड़ों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण समाज में संचार के आधुनिक साधनों से अपरिचित नहीं रह गया हैं दोनों ही गाँवों में संचार एवं सम्प्रेषण के आधुनिक साधन उपलब्ध हैं किन्तु दोनों ही गाँव में कुछ परिवार ऐसे हैं जिनके पास रेडियो की सुविधा भी उपलब्ध नहीं है। वे गाँव के बाहरी सीमा पर स्थित दुकानों से एवं गाँव के पास पड़ोस से देश विदेश की जानकारी प्राप्त करते हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि वर्तमान भूमण्डलिक दौर में संचार एवं सम्प्रेषण के साधनों से ग्रामीण जन का जुड़ाव निरन्तर बढ़ रहा है ग्रामीण समाज की गत्यात्मकता वर्तमान में भूमण्डलिक नगरीय संस्कृति की ओर उन्मुख हैं। जिसमें व्यक्तिगत स्तर पर परिवर्तन तभी संभव है जब गाँव के प्रत्येक व्यक्ति का संचार के साधनों से सीधा जुड़ाव हो यह सामाजिक परिवर्तन का एक ऐसा महत्वपूर्ण कारक है जो जीवन की गुणवत्ता को उन्नत स्वरूप प्रदान करता है अतः यह कहा जा सकता है कि नगरीय समीपता आधुनिक संचार एवं सम्प्रेषण साधनों की प्रभाविकता ग्रामीण संस्थाओं एवं संगठनों के स्वरूपों को परिवर्तित कर रहे हैं। परिवर्तन की इस श्रृंखला में ग्रामीण सामाजिक गतिशीलता की दिशा निर्धारित करके सामजिक संरचना में परिवर्तन किया जा सकता है।

ग्रामीण शैक्षिक स्तर
तालिका संख्या–5

क्र.सं.	शिक्षा	औरावाँ		अन्धपुर देव	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	5 वीं तक	368	38.3	256	41.5
2.	8 वीं तक	206	21.4	137	22.0
3.	10 वीं तक	159	16.5	80	12.9
4.	12 वीं तक	106	11	68	10.9
5.	स्नातक	60	6.2	42	6.8
	परास्नातक	43	4.4	25	4
6.	तकनीकी शिक्षा	19	1.9	12	1.9
7.	कुल योग	961	100	595	100

प्राप्त आंकड़ों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि औरावाँ गाँव में 38.3 प्रतिशत लोग 5वीं तक शिक्षित हैं, 21.4 प्रतिशत 8वीं तक, 16.5 प्रतिशत 10वीं तक, 11 प्रतिशत 12 वीं तक, 6.2 प्रतिशत स्नातक, 4.4 प्रतिशत परास्नातक, 1.9 प्रतिशत तकनीक शिक्षा में इंजीनियरिंग की शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं जबकि अन्धपुर देव में 41.5 प्रतिशत व्यक्ति 5वीं तक शिक्षा ग्रहण की है। 22 प्रतिशत व्यक्ति 8वीं तक की 12.9 प्रतिशत दसवी तक 10.9 प्रतिशत 12वीं तक 6.8 प्रतिशत बी0ए0 तक, 4 प्रतिशत एम0ए0 और 1.9 प्रतिशत तकनीक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। ग्रामीण लोग के जीवन में शिक्षा का महत्व बढ़ रह है ग्रामीण समाज में आधुनिक व्यवसायिक शिक्षा स्वयं को जोड़ रहे हैं ग्रामीण लड़कियाँ उच्च शिक्षा और व्यवसायिक शिक्षा को प्राप्त करने के लिये नगरों की ओर बढ़ रही हैं। गाँव में तीन किलोमीटर के दायरे पर एक महिला महाविद्यालय स्थित है। औरावाँ के समान अन्धपुर देव में भी शिक्षा के प्रति जागरूकता युवा वर्ग में अधिक है किन्तु ग्रामीण लड़कियों में शिक्षा के प्रति अधिक रूझान अधिक नहीं वही निर्धन परिवार में धन के आभाव में अपने बच्चों को शिक्षा नहीं प्रदान कर पा रहे हैं। निम्न वर्गीय परिवार उनकी शिक्षा बीच में ही छुड़वा देते है लड़को की तुलना में लड़कियों को ही बीच में शिक्षा छोड़नी पड़ती है परिवार के सदस्यों का ऐसा मानना है कि लड़कों को पढ़ाना ज्यादा आवश्यक है क्योंकि उन्हें परिवार की आर्थिक दायित्वों का निर्वाह करना है लड़कियों को पढ़ाने के बाद भी उनकी शादी करनी है अतः उनकी शिक्षा बीच में छुड़वाकर उन्हें सिलाई, कढ़ाई अन्य कार्य सीखाते है। अतः यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण शिक्षित युवक और युवतियों में शिक्षा के प्रति रूझान निरन्तर बढ़ रहा है ग्रामीण परिवार संसाधन के आभाव में अपने बच्चों को उच्च शिक्षा प्रदान नहीं कर पा रहे हैं वहीं मध्यम वर्गीय व उच्च वर्गीय परिवारों के युवा शिक्षा प्राप्ति के लिये शहर की ओर बढ़ रहे हैं वर्तमान समय में भी स्त्रियों की शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण की कमी है किन्तु परिवर्तनकारी शक्तियों ने ग्रामीण रूढ़िवादी प्रतिमानों को शिथिल किया गया है।

जातीय आधार पर ग्रामीण साक्षरता का विवरण

तालिका संख्या–6

क्रसं.	सामाकि समूह	औरावाँ						अन्द्यपुर देव					
		साक्षर		निरक्षर		अनिवेशित		साक्षर		निरक्षर		अनिवेशित	
		सं0	प्रति	सं0	प्रति	सं0	प्रति	सं0	प्रति	सं0	प्रति	सं0	प्रति
1.	सामान्य	500	40	10	0.8	30	2.4	80	10.6	2	0.3	3	0.4
2.	अन्य पिछड़ा वर्ग	336	27.1	155	12.5	21	1.7	464	61.5	62	8.2	51	6.9
3.	अनुसूचित	125	10.1	37	2.9	31	2.5	76	10	6	0.8	10	1.3
	योग	961	77.2	202	16.2	82	6.6	620	82	70	9.3	64	8.6
	कुल योग	औरावाँ– साक्षर–961, निरक्षर–202, अनिवेशित–82 कुल–1245 अन्द्यपुर देव –साक्षर–620, निरक्षर–70 और अनिवेशित 64 कुल–754											
	कुल प्रतिशत	औरावाँ – साक्षर–77.2, निरक्षर–16.2 अनिवेषित, 6.6=100 अन्द्यपुर देव– साक्षर–82, निरक्षर–9.3 अनिवेशित–8.6=100											

प्राप्त आंकड़ों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि औरावाँ गाँव में सामान्य जाति के 40 प्रतिशत साक्षर, 0.8 प्रतिशत निरक्षर एवं 2.4 प्रतिशत बच्चां का निवेश नहीं हुआ है। अन्य पिछड़ा वर्ग में 27.1 प्रतिशत साक्षर 12.5 प्रतिशत निरक्षर और 1.7 अनिवेशित बच्चे हैं वहीं अनुसूचित जाति 10.1 प्रतिशत व्यक्ति साक्षर 16.2 प्रतिशत निरक्षर एवं 6.6 प्रतिशत अनिवेशित बच्चे हैं। जबकि अन्द्यपुर देव में 10.6 साक्षर, 0.5 प्रतिशत निरक्षर एवं 0.4 प्रतिशत अनिवेश बच्चे है, अन्य पिछड़े वर्ग में 61.5 प्रतिशत साक्षर, 8.2 प्रतिशत निरक्षर एवं 6.9 प्रतिशत अपनिवेशित बच्चे हैं वहीं अनुसूचित जाति में 10 प्रतिशत साक्षर 0.8 प्रतिशत निरक्षर एवं 1.3 प्रतिशत अनिवेशित बच्चे हैं, प्राप्त आंकड़ों से यह ज्ञात होता है कि दोनों ही गाँव में शिक्षा के प्रति जागरूकता गाँव को सभी जातियों में बढ़ रही है किन्तु धन एवं समुचित संसाधनों के आभाव में गाँव का निम्न वर्ग उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं। दोनों ही गाँव में सामान्य जाति के सदस्यों में अन्य जातियों को अपेक्षा जागरूकता अधिक है। अन्द्यपुर देव में अन्य पिछड़ा वर्ग के निर्धन परिवार सभी बच्चों को विद्यालयी शिक्षा नहीं दे पा रहे हैं। गाँव में 5 लोध परिवार ऐसे हैं जिन्होंने 14 से 16 साल की उम्र के बच्चों को पढ़ाई छुड़ाकर उन्हें रोजगार और मजदूरी कर रहे हैं। जिससे उनके परिवार का जीवन निर्वाह हो सके। प्राप्त आंकड़ों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि वर्तमान भूमण्डलिक दौर में भी ग्रामीण निर्धन, परिवारों में शिक्षा एक चुनौतीपूर्ण विषय है।

मध्य मे छोड़ी जाने वाली शिक्षा का विवरण

तालिका संख्या–7

क्र.सं.	स्कूल छोड़ने वाले विद्यार्थी	औरावाँ		अन्द्यपुर देव	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	सामान्य	12	20	00	00
2.	अन्य पिछड़ा वर्ग	39	65	57	73
3.	अनुसूचित	09	15	21	27
	योग	60	100	78	100

प्राप्त आंकड़ों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि औरावाँ में कुल स्कूली शिक्षा छोड़ने वाले बच्चों में 20 प्रतिशत सामान्य जाति के, 65 प्रतिशत अन्य पिछड़ा वर्ग, एवं 15 प्रतिशत अनुसूचित जाति के बच्चों ने शिक्षा बीच में छोड़ दी। जबकि अन्द्यपुर देव में 0 प्रतिशत सामान्य जाति 73 प्रतिशत अन्य पिछड़ा वर्ग एवं 27 प्रतिशत अनुसूचित जाति के बच्चों ने शिक्षा बीच में ही छोड़ दी है। प्राप्त आंकड़ों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि सामान्य जाति के निर्धन परिवारों के बच्चे बीच में ही छोड़ दिया है वही अन्य पिछड़ा वर्ग और अनुसूचित जाति के धन के आभाव में शिक्षा मध्य में ही छोड़ दी है। शिक्षा छोड़ने का एक मात्र कारण निर्धनता नहीं है। जागरूकता की कमी एंव लिंग असामानता भी प्रमुख कारण हैं। लड़कों की तुलना में लड़कियों को शिक्षा को अधिक महत्व नहीं दिया जाता। अन्दपुद देव में एक प्राथमिक विद्यालय स्थिति है आगे की शिक्षा के लिए गाँव के व्यक्ति बच्चों का औरावाँ गाँव भेजते है, प्राप्त तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि गाँव के संसाधन परिवारों में शिक्षा के प्रति निराशाजनक दृष्टिकोण है। अतः निम्नवर्गीय निम्नजाति परिवारो में शिक्षा के सम्बन्ध में परिवर्तन होना शेष है।

गाँवों में मतदान मे सहभागिता का विवरण

तालिका संख्या–8

क्र.सं.	ग्राम पंचायत	औरावाँ		अन्द्यपुर देव	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	स्वयं से	107	85.6	69	75
2.	दबाव में	18	14.4	23	25

प्राप्त आंकड़ों के आधार पर यह ज्ञात होता है कि औरावाँ गाँव में 85.6 प्रतिशत व्यक्ति स्वयं अपनी इच्छा से वोट डालते हैं। वही 14.4 प्रतिशत व्यक्ति दबाव में वोट डालते हैं जबकि अन्द्यपुर देव में 75 प्रतिशत व्यक्ति स्वयं से एवं 25 प्रतिशत जातीय दबाव से वोट डालते हैं ग्रामीण राजनीति में जातीय गुटबाजी का प्रमुख स्थान होता है। औरावाँ में प्रधान पद पर निरन्तर 40 वर्षों तक ठाकुर जाति का प्रमुख रहा है। मध्य में एक नाई जाति का सदस्य प्रधान बना। वर्तमान के प्रधान ब्राह्मण जाति के है अन्य जातियाँ सामाजिक आर्थिक रूप से निर्बल है अतः वे ग्रामीण राजनीति में अपना स्थान नहीं बना सके हैं। प्राप्त आंकड़ों के आधार पर यह ज्ञात होता है कि 46 प्रतिशत उत्तरदाताओं यह मानना है कि यदि उन्हें अवसर मिले तो वह अपनी परिवार की महिलाओं को चुनाव में खड़ा करेंगे। जबकि 54 प्रतिशत स्वयं प्रधान पद का चुनाव लड़ना चाहते है उनका मानना है कि महिलाएँ राजनीति सम्बन्धी दायित्वों का निर्वाह करने में अक्षम है। दोनों ही गाँव में 76 प्रतिशत उत्तरदाताओं का यह मानना है कि पंचायती राज व्यवस्था से कुछ स्तर पर बदलाव आया है। 24 प्रतिशत उत्तरदाताओं का यह मानना है कि कोई बदलाव नहीं आया है। ग्रामीण जातीय गुट बाजी के प्रभाव से वास्तविक लाभार्थी लाभ से वंचित रह जाते हैं। यह उल्लेखनीय है कि पंचायती राज के प्रभाव ग्रामीण राजनीति पर गहनता से पड़ा है। नगर समीपस्थ के कारण जातियों अपने राजनीतिक गठबन्धन स्थापित कर रहे हैं। ग्राम प्रधानों के राजनीतिक दलों से सम्बन्ध परस्पर बढे हैं। आधुनिक तीव्र आवगमन के साधनों के प्रभाव से ग्राम स्तर पर राजनीतिक दलों का प्रभाव बढ़ा है। वर्तमान भूमण्डलिक दौर में राजनीतिक दलों एवं

संस्थाओं की प्रभाविकता से ग्रामीण समुदाय अछूता नहीं रह गया है उल्लेखनीय है कि राजनीतिक गतिविधियों के समय दोनों ही गाँवों में जातियों के मध्य हिंसक घटनाएँ भी घटित होती है आधुनिक संचार साधनों को प्रभाविकता से ग्रामीणजन का राजनीतिक चर्चा में सहभागिता करते हैं। प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण सामाजिक संरचना में परिवर्तन की शक्तियाँ विद्यमान है वर्तमान भूमण्डलिक दौर में ग्रामीण संस्थाओं के स्वरूपों में परिवर्तन आया है। भूमण्डलीकरण का प्रभाव दोनों ही गाँवों पर समान रूप से पड़ रहा है किन्तु भूमण्डलीकरण ग्रामीण समाज के बड़े वर्ग के प्रभावित नहीं कर सका है। धन एवं जीवन जीने योग्य समुचित साधनों के आभाव में यह वर्ग स्वयं को आधुनिक समाज से जोड़ पाने में अक्षम है किन्तु यह कहा जा सकता है कि भूमण्डलीकरण की बाजारवादी प्रवृत्ति का प्रभाव ग्रामीण समाज के प्रत्येक स्तर पर पड़ रहा है। दोनों ही गाँवों में दिन प्रतिदिन के जीवन में उपयोग की जाने वाली वस्तुओं का उपयोग निरन्तर बढ़ रहा है।

निष्कर्ष

औरावाँ और अन्द्यपुर दोनों ही गाँव की राजनीति में उच्च जातियों का प्रभुत्व हैं गाँव के इतिहास से यह स्पष्ट होता है कि गाँव में सर्वप्रथम अट्ठाइसा चौहान आकर बसे थे। प्राप्त सूचनाओं के आधार पर दोनों ही गाँव में लगातार 40 वर्षों तक ग्रामीण सत्ता पर ठाकुर परिवारों का प्रभुत्व रहा है। 40 वर्षों के पश्चात् एक धोबी ग्राम प्रधान हुआ किन्तु वर्तमान में निरन्तर 10 वर्षों तक ग्रामीण राजनीतिक सत्ता पर ब्राह्मण जाति का प्रभुत्व बना हुआ है। गाँव के प्रारम्भिक काल में जाति पंचायत की जटिलता विद्यमान है। प्रत्येक जाति की अपने एक जाति पंचायत हुआ करती थी। गाँव के उच्च जातिय परिवारों में जातिय बस्तियों के मध्य में एक वर्गाकार ढाईफुट ऊँचा स्थान होता था। जिस पर उच्च जाति के सदस्य पंचायत लगाते थे। इसके साक्ष्य आज भी गाँव में अवस्थित है। वहीं निम्न जाति एवं पिछड़े वर्ग में जाति पंचायत बस्ती में स्थित मैदान में ही लगायी जाती थी। दोनों ही गाँव जाति पंचायत के द्वारा दिये गये निर्णय को सर्वोपरि माना जाता था किन्तु पंचायती राज्य व्यवस्था की प्रभाविकता से ग्रामीण राजनीति के स्वरूप में परिवर्तन आया है। सूचना एवं संचार परिवहन के साधनों की प्रभाविकता ने प्रत्येक जातियाँ अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हुई है। ग्रामीणजन जातीय सम्बन्धी विवादों को संवैधानिक व्यवस्था द्वारा हल करने में विश्वास रखते हैं गाँव की उच्च जातियों से होने वाले विवादों में दलित जातियों सूचना के अधिकारों को उपयोग में ला रहे हैं। पूर्व में हुये अध्ययनों में यह माना गया कि ग्रामीण राजनीति, शक्ति संरचना ही गाँव की सामाजिक, आर्थिक गतिशीलता में प्रभावी भूमिका निभाते हैं किन्तु वर्तमान भूमण्डलिक दौर में परम्परागत राजनीतिक शक्ति का स्वरूप शिथिल हुआ है। आधुनिक परिवर्तनकारी मूल्यों की प्रभाविकता ने ग्रामीण राजनीति को प्रभावित किया है अतः यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण समाज में आधुनिक भूमण्डलिक दौर में राजनीति की दशाओं में परिवर्तन आये हैं ग्रामीण जन अपने अधिकारों के प्रति निरन्तर जागरूक हो रहे हैं जो कि लोकतांत्रिक समाज में निवास करने वाले व्यक्ति के समता मूलक विकास को परिभाषित करता है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1 बेली, एफ0 जी0, *कास्ट एण्ड इकोनामिक्स फॉरेटियर्स,* बम्बई, आक्सफोर्ड, यूनीवर्सिटी प्रेस 1958

2 बेत्ते, आद्रे, *सोसाइटी एण्ड पालिटिक्स इन इण्डियाः एसेज इन कन्टम्पोरेरी परस्पेक्टिव,* एथलान प्रेस, 1991

3 बेत्ते, आन्द्रे, *कास्ट क्लास एण्ड पावर,* दिल्ली, आक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी प्रेस, 2004

4 बाटोमोर, टी0बी0, *समाजशास्त्र समस्याओं और साहित्य का अध्ययन* अनुवादक गोपाल प्रधान, प्रथम हिन्दी संस्करण, नई दिल्ली, 2004

5 देसाई, ए0आर, *''रूरल सोशियोलॉजी इन इण्डिया,* बम्बई, पापुलर प्रकाशन, 1978

6 दूबे, एस0सी0, *भारतीय समाज,* विकास पब्लिकेशन,1990

7 दुबे, एस0सी0, *कन्टेमपोरेरी इण्डिया एण्ड इट्स मॉर्डनाइजेशन,* नई दिल्ली, विकास पब्लिकेशन 1974

8 दुबे, एस0सी0, विकास का समाजशास्त्र वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, 2000

9 दुबे, एस0सी0, *भारतीय ग्राम* वाणी प्रकाशन, दरियागंज नई दिल्ली, तृतीय संस्करण, 2000

10 गुप्ता, दीपांकर, *बिदरिंग द इण्डियन विलेज कल्चर एण्ड एर्गीकल्चर इन रूरल इण्डिया इकानामिक पॉलिटिक विकली,* वाल्यूम एक्स एल0 8, 2005

11 मरियट, मकियम, *वेर्स्टन मेडिसिन इन विलेज ऑफ नार्दन इण्डिया,* सेज पब्लिकेशन, 1955

12 मुखर्जी, आर0के0 *डायनिमिक्स ऑफ रूरल सोसाइटीः ए स्टडी ऑफ इकोनॉमिक्स स्ट्रक्चर,* इन बंगाल विलेज, बर्लिन, अकदेयूई बर्लाग, 1957

13 मुखर्जी, आर0के0, *सिक्स विलेज इन बंगाल,* बम्बई, पॉपुलर प्रकाशन, 1958रावत, हरिकृष्ण : समाजशास्त्र विश्वकोष, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, 2010